Kisi Ke Aib Mat Dhhundo (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 301
Weekly Booklet : 301

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त मअ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

किसी के ऐब मत ढूंडो

सफ़हात 25

आलिम की ग़लती बयान करना मन्अ क्यूं ? 04
सोने की अंगूठी हाथ में आग 16
फ़िरऔन की इस्लाह भी नर्म मिज़ाज से 11
दुन्या में आने का मक़्सद 22

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**किसी के ऐब मत ढूंडो**
सिने त़बाअ़त	:	शव्वालुल मुकर्रम **1444** हि., मई **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

किसी के ऐ़ब मत ढूंडो

येह रिसाला (**किसी के ऐ़ब मत ढूंडो**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून किताब "नेकी की दा'वत" के सफ़्हा 395 ता 414 से लिया गया है।

किसी के ऐब मत ढूंडो

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 24 सफ़्हात का रिसाला **"किसी के ऐब मत ढूंडो"** पढ़ या सुन ले उसे दूसरों के ऐब छुपाने और उन की ख़ूबियों पर नज़र रखने वाला बना और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।" (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

गुनाह से मन्अ़ करना कब फ़र्ज़ है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बेशक सुन्नतों भरा बयान करना कारे सवाब और बहुत बड़ी सआ़दत की बात है मगर येह ज़ेह्न में रहे कि वा'ज़ व नसीह़त पर मब्नी बयान करना मुस्तह़ब काम है, अगर नहीं किया तो कुछ गुनाह नहीं मगर किसी को गुनाह करते देखा और गुमान ग़ालिब है कि उस को बताएगा तो बाज़ आ जाएगा तो कई घन्टों के बयान के मुक़ाबले में उस को गुनाह से मन्अ़ करने में ज़ियादा सवाब है क्यूं कि अब उस को

मन्अ़ करना फ़र्ज़ है और मन्अ़ न करने वाला गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1197 सफ़ह़ात की किताब, ''बहारे शरीअ़त'' जिल्द 3 सफ़ह़ा 615 ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''अगर ग़ालिब गुमान येह है कि येह उन (बुराई करने वालों) से कहेगा तो वोह इस की बात मान लेंगे और बुरी बात से बाज़ आ जाएंगे, तो اَمْرٌبِالْمَعْرُوْف (या'नी अच्छाई का हुक्म करना) वाजिब है, इस (या'नी किसी को बुराई करता देखने वाले) को (बुराई से मन्अ़ करने से) बाज़ रहना जाइज़ नहीं।''

जो नेकी की दा'वत की धूमें मचाए मैं देता हूं उस को दुआ़ए मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इमामे आ'ज़म को गुनाह नज़र आ जाते थे !

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 308 सफ़ह़ात की किताब ''इस्लामी बहनों की नमाज़'' सफ़ह़ा 12 पर है : ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मर्तबा इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौ जवान को वुज़ू बनाते हुए देखा, उस से वुज़ू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़त़रे टपक रहे थे। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ बेटे ! **मां बाप की ना फ़रमानी** से तौबा कर ले। उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : ''मैं ने तौबा की।'' एक और शख़्स के वुज़ू (में इस्ति'माल में होने वाले पानी) के क़त़रे टपक्ते देखे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ मेरे भाई ! तू ज़िना से तौबा कर ले।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने तौबा की।''

एक और शख़्स के वुज़ू के क़त़रात टपक्ते देखे तो उसे फ़रमाया : "शराब नोशी और गाने बाजे सुनने से तौबा कर ले।" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने तौबा की।" **इमामे आ'ज़म** अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर कश्फ़ के बाइ़स चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे लिहाज़ा आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी : **अल्लाह** पाक ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए।" (المیزان الکبریٰ، 1/130)

जानबूझ कर किसी का ऐ़ब मा'लूम करना कैसा ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! करोड़ों ह़नफ़िय्यों के पेश्वा इमामे आ'ज़म, ह़ज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की चश्मे विलायत लोगों की वुज़ू के ज़रीए़ झड़ने वाली मा'सिय्यत या'नी ना फ़रमानियां देख लेती थी ! बेशक येह आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की अ़ज़ीम **करामत** थी ताहम आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को लोगों के उ़यूब पर मुत्त़लअ़ होना गवारा न हुवा और दुआ़ के ज़रीए़ अपना येह कश्फ़ ख़त्म करवा दिया ! यहां वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो कि इमामे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की मह़ब्बत का दम तो भरते हैं मगर ज़बर दस्ती आड़े तिरछे सुवालात (CROSSE QUESTIONS) कर के लोगों के ऐ़बों की टटोल में भी रहते हैं, याद रखिये ! बिला मस्लह़ते शर्ई़ इरादतन किसी मुसल्मान का ऐ़ब मा'लूम करना गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान**" सफ़ह़ा 950 पर पारह 26 **सूरतुल ह़ुजुरात** आयत नम्बर 12 में है : ﴿وَلَا تَجَسَّسُوْا﴾ "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ़ब न ढूंडो।"

आ़लिम की ग़लत़ी बयान करना दो वज्ह से ह़राम है

और अगर उस ऐ़ब को दूसरे पर इस त़रह़ ज़ाहिर किया कि उस को पता हो कि येह फ़ुलां का ऐ़ब है तो येह एक और गुनाह हुवा, अगर वोह ऐ़ब किसी आ़लिमे दीन का था और उस को ज़ाहिर किया तो गुनाह में और भी बढ़ोतरी होगी। चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ कीमियाए सआ़दत में फ़रमाते हैं : आ़लिम की ग़लत़ी बयान करना दो वज्ह से ह़राम है। एक तो इस लिये कि येह ग़ीबत है। दूसरे इस लिये कि लोगों में जुरअत पैदा होगी और वोह इसे दलील बना कर उस की पैरवी करेंगे (या'नी बेबाकी के साथ उसी त़रह़ की ग़लत़ियां करेंगे) और शैत़ान भी उस (ग़लत़ियों में पैरवी करने वाले) की मदद के लिये उठ खड़ा होगा और (गुनाहों पर दिलेर बनाने के लिये) उस से कहेगा कि तू (भी यूं और यूं कर कि) फ़ुलां आ़लिम से बढ़ कर परहेज़ गार तो नहीं है। (کیمیائے سعادت، 1/410) जितने ज़ियादा लोगों को उस ख़त़ा पर मुत्त़लअ़ करेगा, गुनाहों में इज़ाफ़ा होता चला जाएगा। मुसल्मान को चाहिये कि अव्वल तो लोगों के उ़यूब जानने से बचे अगर कोई बताने लगे तब भी सुनने से ख़ुद को बचाए। बिलफ़र्ज़ किसी त़रह़ किसी का ऐ़ब नज़र आ गया या मा'लूम हो गया हो तो उस को दबा दे। बिला मस्लह़ते शर्ई़ हरगिज़ किसी पर ज़ाहिर न करे।

ऐ़ब पोशी के मुतअ़ल्लिक़ 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ऐ़ब पोशी के ह़वाले से 3 **फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ﴿1﴾ जो अपने मुसल्मान भाई की ऐ़ब पोशी करे **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उस की ऐ़ब पोशी फ़रमाएगा और जो अपने

मुसल्मान भाई का ऐ़ब ज़ाहिर करे **अल्लाह** पाक उस का ऐ़ब ज़ाहिर फ़रमाएगा यहां तक कि उसे उस के घर में रुस्वा कर देगा। (ابن ماجہ، 3/219، حدیث:2546) ﴿2﴾ जो किसी मुसल्मान की तक्लीफ़ दूर करे **अल्लाह** पाक क़ियामत की तक्लीफ़ों में से उस की तक्लीफ़ दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की ऐ़ब पोशी करे तो ख़ुदाए सत्तार क़ियामत के रोज़ उस की ऐ़ब पोशी फ़रमाए (مسلم، ص1394، حدیث:6580) ﴿3﴾ जो शख़्स अपने भाई का ऐ़ब देख कर उस की **पर्दा पोशी** कर दे तो वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। (مسند عبد بن حمید، ص279، حدیث:885)

ऐ़ब ढूंडने की 59 मिसालें

यहां जो मिसालें दी जा रही हैं उन में ऐ़बों की टटोल (या'नी ऐ़बों की तलाश) के साथ साथ ज़िम्नन ग़ीबतें, तोहमतें और बद गुमानियां वग़ैरा भी शामिल हैं। अक्सर ऐसी मिसालें हैं जिन में निय्यत के साथ अह़काम मुरत्तब होंगे मसलन नौकर रखने, शिराकत दारी (या'नी पार्टनर शिप करने) या कहीं शादी का इरादा है तो ह़स्बे ज़रूरत मा'लूमात करना गुनाह नहीं बल्कि इस त़रह़ के मुआ़मले में जिस से पूछा गया उस पर वाजिब है कि दुरुस्त बात बताए और अगर इस क़िस्म के मुआ़मलात की वज्ह से सुवाल न किया गया हो तो **ग़ीबतों** और तोहमतों के ज़रीए अपने लिये जहन्नम में जाने का सामान करने के बजाए ऐ़ब पोशी से काम ले कर जन्नत का ह़क़दार बने। मगर उ़मूमन त़रह़ त़रह़ के सुवालात के ज़रीए ऐ़बों की टटोल (या'नी उ़यूब की मा'लूमात और कुरेद) में येह निय्यत नहीं होती, बस लोग पूछने की ख़ातिर पूछते रहते हैं और बसा अवक़ात ख़ुद भी गुनाहों में पड़ते और बारहा जवाब देने वाले को भी गुनहगार कर देते हैं।

❀ किसी ने मकान किराए पर लिया तो पूछना : मकान मालिक कैसा है ? येह सुवाल फ़ी नफ़्सिही गुनाह न सही मगर कई गुनाहों का सबब बन सकता है, मसलन किराए दार ने जवाबन कहा : मुआ़मलात का साफ़ नहीं, बहुत बद अख़्लाक़ और कन्जूस है, इस त़रह़ तीन ऐ़ब खोले वोह भी अगर उस में मौजूद हों तो ही ऐ़ब कहलाएंगे और अब येह बताना तीन ग़ीबतें हुईं वरना तोह्मतें । और अगर सिर्फ़ इस लिये पूछा कि मकान मालिक के उ़यूब मा'लूम हों तो अब येह ''ऐ़ब ढूंडना'' हुवा जो कि गुनाह व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । ❀ किसी ने मकान किराए पर दिया तो पूछना : किराए दार कैसा है ? येह सुवाल भी फ़ी नफ़्सिही गुनाह न सही मगर कई गुनाहों का सबब बन सकता है, मसलन मालिके मकान ने जवाबन कहा : बड़ा ही चालबाज़ है, कभी वक़्त पर किराया नहीं देता, ख़्वाह म ख़्वाह की ठोका ठाकी कर के मेरे मकान का हुल्या बिगाड़ कर रख दिया है । इस त़रह़ तीन ऐ़ब खोले वोह भी अगर उस में मौजूद हों तो ही ऐ़ब कहलाएंगे और अब येह बताना तीन ग़ीबतें हुईं वरना तोह्मतें । ❀ आप का नया नौकर बराबर काम करता है या नहीं ? येह भी बिला इजाज़ते शर्ई पूछना ऐ़ब ढूंडना है और इस सुवाल के जवाब में पूरा ख़त़रा है कि जिस से पूछा गया वोह नौकर के बारे में कामचोर है, ह़राम ख़ोर है वग़ैरा कह कर गुनहगार हो जाए । ❀ रात देर तक जागते रहते हो फ़ज्र भी पढ़ते हो या नहीं ? ❀ आप नमाज़ पढ़ते हैं या नहीं ? ❀ आप के वालिद साह़िब नमाज़ी हैं या नहीं ? ❀ तुम ने अभी तक नए कपड़े नहीं पहने ! ईद की नमाज़ भी पढ़ी या नहीं ? ❀ रमज़ान के महीने में किसी से पूछना ! वाह भई ! आज बड़े फ़्रेश (fresh या'नी ताज़ादम) लग रहे हो ! रोज़ा भी रखा है या नहीं ?

❀ इस बार रमज़ानुल मुबारक में आप ने कितने रोज़े रखे ? ❀ कोई तरावीह़ छोड़ी तो नहीं ? ❀ तुम पूरी ज़कात निकालते हो या नहीं ? ❀ आप की बीवी शरीफ़ तो है ना ? ❀ लड़ती तो नहीं ? (येही सुवालात औ़रतों में "शौहर" के बारे में **ऐ़बों की टटोल** वाले हैं) ❀ शादी शुदा बेटी की मां से पूछना : आप की बेटी की सास अच्छी है या नहीं ? ❀ लड़ाकी तो नहीं ? ❀ रोटी देती है या नहीं ? ❀ बेटी को सताती तो नहीं ? ❀ अपने बेटे के कान तो नहीं भरती ? ❀ वोह जो उस की त़लाक़ड़ी नन्द घर में बैठी है वोह मसाइल तो नहीं खड़े करती ? ❀ बेटे की शादी के बा'द उस की मां से पूछना : अब बेटा आप का ख़याल रखता है या नहीं ? ❀ पहले की त़रह़ तनख़्वाह ला कर आप के हाथ में देता है या अपनी जोरू के ह़वाले कर देता है ? ❀ बहू ने काला इ़ल्म करा के उसे अपनी त़रफ़ तो नहीं कर लिया ? बहू अच्छी है या नहीं ? ❀ ता'वीज़ गन्डे तो नहीं करती ? ❀ ज़बान दराज़ तो नहीं ? ❀ आप की इ़ज़्ज़त करती है या नहीं ? ❀ उस दिन फ़ुलां के घर से तेज़ गुफ़्तगू की आवाज़ आ रही थी कौन कौन लड़ रहे थे ? ❀ हां भई ! उस का शौहर बड़ा ज़ालिम है कहीं बिचारी की बे क़ुसूर पिटाई तो नहीं लगाता ? ❀ दूल्हा से पूछना : सुसर साह़िब ने जहेज़ देने में बुख़्ल से तो काम नहीं लिया ? ❀ उस दिन ख़ूब बन ठन कर सुसराल पहुंचे थे, सुसर साह़िब ने लिफ़्ट भी कराई कि नहीं ? ❀ सह़ीह़ त़रीक़े पर आव भगत की या नहीं ? ❀ शादी शुदा इस्लामी भाई से सुवाल करना : आप के बच्चों की अम्मी पांच वक़्त की नमाज़ी है या नहीं ? ❀ आप के भाइयों से पर्दा करती है या नहीं ? ❀ बे पर्दा तो नहीं घूमती ? ❀ आप का बॉस (BOSS । सेठ) सह़ीह़ आदमी है या नहीं ? ❀ कन्जूस तो नहीं ? ❀ बद अख़्लाक़ तो

नहीं ? ❀ मुलाज़िमों को गालियां तो नहीं निकालता ? ❀ त़लबा से बिला ह़ाजत पूछना : आप के फ़ुलां उस्ताज़ साह़िब कैसा पढ़ाते हैं ? ❀ उन का पढ़ाना कुछ समझ में भी आता है या नहीं ? ❀ किसी का मेहमान बनने वाले से पूछना : हां भई ! उन की मेज़बानी का लुत्फ़ आ रहा है या नहीं ? ❀ उन्हें मेहमान नवाज़ पाया या नहीं ? ❀ दा'वते इस्लामी के फ़ुलां ह़ल्क़े की मुशावरत का नया निगरान आप को कैसा लगा ? ❀ इस्लामी भाइयों को झाड़ता तो नहीं ? ❀ निगरान से पूछना : फ़ुलां मुबल्लिग़ आप की इत़ाअ़त करता है या अपनी चलाता है ? ❀ फ़ुलां को तन्ज़ीमी ज़िम्मेदारी से हटा दिया, क्या उस का किरदार कमज़ोर था ? ❀ फ़ुलां मुदर्रिस या नाज़िम को फ़ारिग़ कर दिया, उस ने क्या गड़बड़ की थी ? ❀ किसी मुबल्लिग़ से पूछना : सच सच बताइयेगा कि आप ने आज का बयान अपनी वाह वाह करवाने के लिये किया या रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर ? ❀ किसी मह़फ़िले ना'त में ग़ैर ह़ाज़िर रहने वाले ना'त ख़्वां से पूछना : फ़ुलां जगह तुम ना'त ख़्वानी में इस लिये नहीं आए थे ना कि यहां "कुछ" मिलेगा नहीं ? ❀ आप सिर्फ़ दा'वते इस्लामी का चैनल ही देखते हैं या दूसरे चेनल्ज़ पर गुनाहों भरे प्रोग्राम भी देख लेते हैं ? ❀ फ़िल्में डिरामे तो नहीं देखते ? ❀ फ़ुलां अफ़्सर ने आप का काम फ़्री (free या'नी मुफ़्त) में ही किया है ना ! पैसे वैसे तो नहीं मांगे ? ❀ फ़ुलां की गाड़ी से टकरा कर आप ज़ख़्मी हुए, क़ुसूर उस का था या आप का ? ❀ फ़ुलां डॉक्टर ने सह़ीह़ त़रह़ चेक भी किया या मुफ़्त में फ़ीस वुसूल कर ली ? ❀ त़लाक़ देने वाले दोस्त से पूछना : यार ! तुम ने उसे क्यूं त़लाक़ दे दी ? (इस सुवाल पर उ़मूमन ठीक ठाक गुनाहों का दरवाज़ा खुलता है) ❀ (ख़्वाह म ख़्वाह

पूछना) वोह दुकानदार कैसा है ? ❀ ठग तो नहीं ? ❀ लूटता तो नहीं ? (या'नी बहुत महंगा माल तो नहीं बेचता ?) ❀ वोह देखने में तो बड़ा शरीफ़ लगता है, आप को मा'लूम होगा, कहीं फ़ड्डेबाज़ तो नहीं ? ❀ आप का नया पड़ोसी कैसा है ? बच कर रहना मुझे तो सहीह़ आदमी नहीं लगता !

किसी की ख़ामियां देखें न मेरी आंखें और सुनें न कान भी ऐ़बों का तज़्किरा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 99)

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

शीरीं मक़ाली ने दिल की दुन्या बदल डाली

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़ुज़ूल सुवालों और लोगों के ऐ़बों की टटोल और मा'लूमात की मन्हूस आ़दात निकालने, कोई किसी के ऐ़ब बयान करने लगे तो उस को हिक्मते अ़मली से टालने और मुम्किना सूरत में उस की ऐ़ब खोलने की बुरी ख़स्लत मिटाने का जज़्बा पाने, ग़ीबतों, चुग़्लियों और बद गुमानियों से बचने और बचाने वग़ैरा की कुढ़न अपनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आमाल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ ''जाएज़ा'' कर के नेक आमाल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस मदनी मक़्सद ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है''

के हुसूल की ख़ातिर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह्रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाऊं चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है : नेक सोह़बत से दूरी के सबब वोह गाने बाजे सुनने और फ़िल्में डिरामे देखने जैसे गुनाहों में डूबे हुवे थे, उन की ज़िन्दगी के शबो रोज़ ना फ़रमानियों में गुज़र रहे थे। उन की बेहतरी का सबब येह बना कि एक रोज़ अपने अ़लाक़े के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी आ़शिक़े रसूल से मेरी मुलाक़ात हो गई, सलाम व मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) के बा'द इन्तिहाई अह्सन (या'नी उ़म्दा) अन्दाज़ में उन्हों ने अपना तआ़रुफ़ पेश कर के मुझ से भी मेरा नाम वग़ैरा दरयाफ़्त किया और अपने मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के तह्त इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकियों की रग़बत और गुनाहों से नफ़रत का ज़ेह्न देना शुरूअ़ किया और इस ज़िम्न में मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे बयानात की बरकत से रूनुमा होने वाली ह़ैरत अंगेज़ "मदनी बहारें" बत़ौरे तरग़ीब सुनाईं। उन की शीरीं मक़ाली या'नी मीठी मीठी बातों ने मेरे दिल की दुन्या ही बदल डाली और मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार दीनी माह़ोल से ज़िन्दगी भर के लिये वाबस्ता हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰه दीनी माह़ोल की बरकत से गुनाहों से नफ़रत, नेकियों से मह़ब्बत और नमाज़ों की पाबन्दी की सआ़दत नसीब हो गई और हुक़ूक़ुल्लाह के साथ साथ हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी का भी ज़ेह्न बन गया।

है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में
डूब सकती ही नहीं मौजों की तुग़्यानी में जिस की कश्ती हो मुह़म्मद की निगह़बानी में

नरमी की अहम्मिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ''मीठे बोल'' में बड़ी तासीर होती है और इस से पथ्थर दिल भी पिघल कर मोम हो जाते हैं लिहाज़ा इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए हमेशा नरमी पेशे नज़र रखनी चाहिये। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1197 सफ़हात की किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' जिल्द 3 सफ़हा 572 पर ह़दीसे पाक है : जो नरमी से महरूम हुवा ख़ैर (भलाई) से महरूम हुवा। ((مسلم، ص1398، حدیث:75-(2592))

इलाही हुस्ने अख़्लाक़ और नरमी की सआ़दत दे

गुनाहों पर नदामत दे, सदाक़त दे, शराफ़त दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़िरऔ़न के पास नेकी की दा'वत के लिये भेजने पर नरमी का हुक्म

अगर दीनी माहोल वाले या वाली के मिज़ाज में ग़ुस्सा, चिड़चिड़ा पन और बद अख़्लाक़ी हुई तो काम्याबी मुश्किल है, लिहाज़ा अपने अख़्लाक़ दुरुस्त कीजिये और वैसे भी जिसे दा'वते इस्लामी के दीनी कामों की धुन हो उस के लिये ठन्डे मिज़ाज का होना ज़रूरी है कि बे जा सख़्ती करने से बारहा काम बनते बनते बिगड़ जाते हैं। नरमी की **अहम्मिय्यत** को इस वाक़िए़ से समझने की कोशिश कीजिये चुनान्चे मन्क़ूल है कि किसी शख़्स ने मामूनुर्रशीद पर एह़तिसाब किया (या'नी किसी ख़ता पर टोका) और उस से सख़्ती के साथ गुफ़्तगू की तो मामूनुर्रशीद ने कहा : ऐ जवां मर्द ! **अल्लाह** पाक ने तुझ से बेहतर अफ़राद को जब मुझ से बदतर फ़र्द के पास भेजा तो उन को हुक्म दिया कि उस से नरमी से बात करो, या'नी ह़ज़राते

सय्यिदैना मूसा और हारून عَلَیۡہِمُ السَّلَام को (जो तुझ से बेहतर थे) फ़िरऔ़न (जो मुझ से बदतर था) के पास जब भेजा तो फ़रमाया : ﴿فَقُوۡلَا لَهٗ قَوۡلًا لَّيِّنًا﴾ (پ16، طٰہٰ:44) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस से नर्म बात कहना।

(اتحاف السادۃ للزبیدی، 8/104 ملخصاً)

शराबी को पोलिस के ह़वाले करना कैसा ?

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ के कातिब ह़ज़रते अबू हैसम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ से अ़र्ज़ की : "मेरे पड़ोसी शराब नोशी करते हैं और मैं पोलीस को बुला कर उन्हें गरिफ़्तार करवाना चाहता हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने फ़रमाया : ऐसा मत कर, उन्हें वा'ज़ व नसीह़त कर। अ़र्ज़ की : मैं ने उन्हें मन्अ़ किया है, लेकिन वोह बाज़ नहीं आते, (तो अब) मैं पोलीस के ज़रीए़ उन को पकड़वाना चाहता हूं। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने फ़रमाया : ऐसा मत कर, बेशक मैं ने हुज़ूरे अक्रम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : जिस ने किसी का ऐ़ब छुपाया गोया उस ने ज़िन्दा दरगोर (या'नी क़ब्र में डाली गई) बच्ची को उस की क़ब्र में ज़िन्दा किया (या'नी उस की जान बचाई)।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، 1/327، حدیث:518)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शराब पीना बेशक बहुत बड़ा और बुरा गुनाह है मगर जो छुप कर ऐसा करता हो बेशक उसे नेकी की दा'वत दे कर तौबा के लिये आमादा किया जाए मगर उस की पर्दापोशी लाज़िमी है।

﴾1﴿ शराब ख़ुद ब ख़ुद सिर्का बन गई ! कैसे ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शराबी के लिये दुन्या व आख़िरत में ख़राबी है उसे तौबा कर लेनी चाहिये ह़ुसूले इ़ब्रत के लिये दा'वते

इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 132 सफ़्हात की किताब, ''तौबा की रिवायात व ह़िकायात'' में वारिद दो ईमान अफ़्रोज़ ह़िकायात ज़रूरतन रद्दो बदल के साथ पेशे ख़िदमत हैं : अमीरुल मुअमिनीन, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ एक बार मदीनए मुनव्वरह की एक पाकीज़ा गली से गुज़र रहे थे कि एक नौ जवान से आमना सामना हो गया, उस ने कपड़ों के नीचे एक बोतल छुपा रखी थी । ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने पूछा : ''ऐ नौ जवान ! येह कपड़ों के नीचे क्या उठा रखा है ?'' उस बोतल में शराब थी, नौ जवान को उसे शराब कहने की हिम्मत न पड़ी, उस ने दिल ही दिल में दुआ़ की : ''**या अल्लाह** पाक ! मुझे ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सामने शरमिन्दा और रुस्वा न फ़रमाना, इन के हां मेरी पर्दापोशी फ़रमा ले, मैं तौबा करता हूं, आयिन्दा कभी शराब नहीं पियूंगा ।'' इस के बा'द नौ जवान ने अ़र्ज़ की : ''या अमीरल मुअमिनीन ! मैं सिर्का (की बोतल) उठाए हुए हूं ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : ''मुझे दिखाओ !'' जब उस ने वोह बोतल आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सामने की और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उसे देखा, तो वाक़ेई वोह सिर्का था । (مکاشفۃ القلوب، ص27،28)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

﴿2﴾ शराबी नौ जवान विलायत की मन्ज़िल पर

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! तौबा की भी क्या ख़ूब बहार है कि तौबा की बरकत से शराब ''सिर्के'' में तब्दील हो गई ! एक और शराबी नौ जवान का वाक़िआ़ समाअ़त फ़रमाइये, जिस ने तैबा कर के बहुत बुलन्द मक़ाम ह़ासिल किया ।

चुनान्चे ह़ज़रते उ़त्बतुल गुलाम رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ नौ जवान थे और (तौबा से पहले) फ़िस्क़ो फ़ुजूर और शराब नोशी में मश्हूर थे। एक दिन ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की मजलिस में आए। ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इस आयते मुबारका की तफ़्सीर कर रहे थे : ﴿اَلَمۡ یَاۡنِ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُهُمۡ لِذِكۡرِ اللّٰهِ﴾ (پ27، الحدید:16) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** की याद (के लिये)।"

आप ने इस क़दर मुअस्सिर बयान फ़रमाया कि लोगों पर गिर्या (या'नी रोना) त़ारी हो गया। एक नौ जवान खड़ा हुवा और कहने लगा : या सय्यिदी ! क्या **अल्लाह** पाक मुझ जैसे फ़ासिक़ व फ़ाजिर की **तौबा** क़बूल करेगा जब मैं तौबा करूं ? शैख़ رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक तेरी तौबा क़बूल करेगा। जब उ़त्बतुल गुलाम رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने येह बात सुनी तो उन का चेहरा ज़र्द पड़ गया, सारा बदन कांपने लगा, चिल्लाए और ग़श खा कर गिर पड़े। जब उन्हें होश आया तो ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने उन के क़रीब आ कर येह अश्आ़र पढ़े :

اَیَا شَابًّا لِّرَبِّ الۡعَرۡشِ عَاصِیۡ اَتَدۡرِیۡ مَا جَزَاءُ ذَوِی الۡمَعَاصِیۡ

(ऐ रब्बुल अ़र्श की ना फ़रमानी करने वाले नौ जवान ! क्या तू जानता है कि गुनहगारों की सज़ा क्या है ?)

سَعِیۡرٌ لِّلۡعُصَاةِ لَهَا زَفِیۡرٌ وَغَیۡظٌ یَوۡمٍ یُّؤۡخَذُ بِالنَّوَاصِیۡ

(ना फ़रमानों के लिये गरजने वाला जहन्नम है जिस में गरज होगी और जिस दिन पेशानियों से पकड़े जाएंगे, उस दिन ग़ज़ब होगा)

فَاِنۡ تَصۡبِرۡ عَلَی النِّیۡرَانِ فَاعۡصِهُ وَاِلَّا كُنۡ عَنِ الۡعِصۡیَانِ قَاصِیۡ

(पस अगर तू आग पर सब्र कर सके, तो ना फ़रमानी कर ले, वरना ना फ़रमानी से दूर हो जा)

وَفِيمَا قَدْ كَسَبْتَ مِنَ الْخَطَايَا رَهِنْتَ النَّفْسَ فَاجْهَدْ فِي الْخَلَاصِ

(तू ने जो गुनाह किये हैं उन में तू ने अपने नफ़्स को फंसा दिया, तो अब नजात के लिये कोशिश कर)

उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर रिक़्क़त त़ारी थी, जब इफ़ाक़ा हुवा, तो कहने लगे : "ऐ शैख़ ! क्या मुझ जैसे कमीने की तौबा भी रब्बे रह़ीम क़बूल फ़रमाएगा ?" शैख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं, **अल्लाह** पाक अपने गुनहगार बन्दे की तौबा और मुआ़फ़ी क़बूल फ़रमाता है।" फिर ह़ज़रते **उ़त्बतुल ग़ुलाम** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने तीन दुआ़एं कीं :

﴿1﴾ "ऐ मेरे **अल्लाह !** अगर तूने मेरी तौबा क़बूल कर ली और मेरे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं तो मुझे ऐसी फ़ह्म (या'नी समझदारी) व याद दाश्त इ़नायत कर, कि उ़लूमे दीन और क़ुरआने करीम से जो सुनूं ह़िफ़्ज़ (या'नी याद) हो जाए ﴿2﴾ ऐ **अल्लाह** पाक ! मुझे पुरसोज़ आवाज़ के ऐ'ज़ाज़ से नवाज़ कि अगर कोई पथ्थर दिल भी मेरी क़िराअत सुने तो उस का दिल नर्म हो जाए ﴿3﴾ ऐ **अल्लाह** पाक ! रिज़्क़े ह़लाल अ़त़ा फ़रमा और वहां से रोज़ी दे कि जिस का मुझे गुमान भी न हो।" **अल्लाह** पाक ने उन की तमाम दुआ़एं क़बूल फ़रमाईं । उन का ह़ाफ़िज़ा ख़ूब मज़्बूत़ हो गया, जब वोह क़ुरआने करीम की तिलावत करते तो उन की तिलावत सुन कर गुनहगार ताइब हो जाते, उन के घर में रोज़ाना सालन का एक पियाला और दो रोटियां रखी होतीं और पता नहीं चलता था कि कौन रख जाता है। इसी ह़ालत में उन का इन्तिक़ाल हुवा । (مکاشفۃ القلوب، ص28،29)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

सोने की अंगूठी पहनने वाले की इस्लाह़

हमारे बुजु़र्गाने दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم अपने मिलने जुलने वालों की इस्लाह़ के लिये कोशां रहा करते थे चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 561 सफ़ह़ात की किताब, **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** सफ़ह़ा 309 पर दिये हुए मज़्मून का खु़लासा है : अ़स्र की नमाज़ के बा'द बड़ा ही पुरकैफ़ समां था। दूर व नज़्दीक से आए हुए लोग मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर एक सच्चे आ़शिके़ रसूल की ज़ियारत व मुलाक़ात से अपने दिलों को मुनव्वर कर रहे थे। इतने में एक साह़िब त़िलाई (या'नी सोने की) अंगूठी पहने ह़ाज़िर हुए तो आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी बुराई से रोकने) का फ़रीज़ा अन्जाम देते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : "मर्द को सोना पहनना ह़राम है, सिर्फ़ एक नग की चांदी की अंगूठी जो साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम की हो उस की इजाज़त है। जो कोई (मर्द) सोने, तांबे या पीतल वग़ैरा किसी भी धात (या'नी मेटल) की अंगूठी पहने या चांदी की साढ़े चार माशे या इस से ज़ियादा वज़्न की एक अंगूठी पहने या कई अंगूठियां पहने अगर्चे सब मिल कर साढ़े चार माशे से कम हों तो उस की नमाज़ मकरूहे तह़रीमी है।" (अज़ मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत स. 309 माख़ूज़न) या'नी जिस का **इआ़दा** करना (या'नी दोबारा पढ़ना) वाजिब है। फ़ुक़हाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہِم फ़रमाते हैं : जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उस के बजा लाने में कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो उस ख़राबी को दूर करने के लिये वोह अ़मल दोबारा बजा लाना इआ़दा कहलाता है। (درمختار وردالمحتار، 2/629)

अल्लाह पाक की आ'ला ह़ज़रत पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

काश ! हम भी गुनाहों से बचाने वाले बनें

काश ! हम सब गुलामाने आ'ला ह़ज़रत भी, **"नेकी की दा'वत"** देने और लोगों को गुनाहों से बाज़ रखने के मुआ़मले में चाक़ चौबन्द रहा करें, येह याद रखिये कि अगर किसी शख़्स ने ना जाइज़ अंगूठी या धात का छल्ला या गले में किसी भी धात की ज़न्जीर पहनी हो और देखने वाले को ज़न्ने ग़ालिब हो कि मन्अ़ करूंगा तो येह मान लेगा तो उस पर मन्अ़ करना वाजिब है, मन्अ़ नहीं करेगा तो गुनहगार होगा। **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की 1197 सफ़ह़ात की किताब, **"बहारे शरीअ़त"** (जिल्द 3) सफ़ह़ा 424 से पहले दो अह़ादीसे मुबारका मुलाह़ज़ा हों, इस के बा'द अंगूठी के मुतअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत के कुछ मज़ीद मदनी फूल क़बूल फ़रमा लीजिये।

﴾1﴿ सोने की अंगूठी.... अंगारा

सह़ीह़ मुस्लिम में अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उस को उतार कर फेंक दिया और येह फ़रमाया कि क्या कोई अपने हाथ में अंगारा रखता है ! जब हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ ले गए। किसी ने उन से कहा : अपनी अंगूठी उठा लो (और पहनने के बजाए) और किसी काम में लाना। उन्हों ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं उसे कभी न लूंगा जब कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे फेंक दिया। (مسلم، ص1157، حدیث:2090)

﴾2﴿ बुतों और जहन्नमियों का ज़ेवर

तिरमिज़ी व अबू दावूद व नसाई ने बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत की, कि एक शख़्स पीतल की अंगूठी पहने हुए थे, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने

फ़रमाया : "क्या बात है कि तुम से बुत की बू आती है ?" उन्हों ने वोह अंगूठी फेंक दी, फिर लोहे की अंगूठी पहन कर आए, फ़रमाया : क्या बात है कि तुम जहन्नमियों का ज़ेवर पहने हुए हो ? उसे भी फेंका और अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! किस चीज़ की अंगूठी बनाऊं ? फ़रमाया : चांदी की बनाओ और एक मिस्क़ाल पूरा न करो। (या'नी साढ़े चार माशे से कम की हो) (سنن ابو داؤد، 4/122، حدیث:4223)

"अंगूठी के ज़रूरी अह़काम" के उन्नीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से अंगूठी के 19 मदनी फूल

❀ मर्द को सोने की अंगूठी पहनना ह़राम है। "सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमियान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सोने की अंगूठी पहनने से मन्अ़ फ़रमाया" (بخاری، 4/67، حدیث:5863) ❀ (ना बालिग़) लड़के को सोने चांदी का ज़ेवर पहनाना ह़राम है और जिस ने पहनाया वोह गुनहगार होगा। इसी त़रह़ बच्चों के हाथ पांव में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना **ना जाइज़** है। औ़रत ख़ुद अपने हाथ पांव में लगा सकती है, मगर लड़के को लगाएगी तो गुनहगार होगी। (बहारे शरीअ़त, 3/428, درمختار و رد المحتار، 9/598) बच्चियों के हाथ पांव में मेहंदी लगाने में ह़रज नहीं। ❀ **लोहे** की अंगूठी जहन्नमियों का ज़ेवर है (ترمذی، 3/305، حدیث:1792) ❀ मर्द के लिये वोही अंगूठी जाइज़ है जो मर्दों की अंगूठी की त़रह़ हो या'नी सिर्फ़ एक नगीने की हो और अगर उस में (एक से ज़ियादा या) कई नगीने हों तो अगर्चे वोह चांदी ही की हो, मर्द के लिये **ना जाइज़** है (ردالمحتار، 9/597) ❀ बिग़ैर नगीने की अंगूठी पहनना **ना जाइज़** है कि येह अंगूठी नहीं छल्ला है ❀ ह़ुरूफ़े मुक़त्त़आ़त की अंगूठी पहनना जाइज़ है मगर ह़ुरूफ़े मुक़त्त़आ़त वाली अंगूठी बिग़ैर वुज़ू पहनना और छूना

या मुसाफ़हे़ के वक़्त हाथ मिलाने वाले का उस अंगूठी को बे वुज़ू छू जाना जाइज़ नहीं ❀ इसी त़रह़ मर्दों के लिये एक से ज़ियादा (जाइज़ वाली) अंगूठी पहनना या (एक या ज़ियादा) छल्ले पहनना भी **ना जाइज़** है कि येह (छल्ला) अंगूठी नहीं। औ़रतें छल्ले पहन सकती हैं (बहारे शरीअ़त, 3/428) ❀ चांदी की एक अंगूठी एक नग (या'नी नगीने) की, कि वज़्न में साढ़े चार माशे (या'नी चार ग्राम 374 मिली ग्राम) से कम हो, पहनना जाइज़ है अगर्चे बे ह़ाजते मोहर, (मगर) इस का तर्क (या'नी जिस को स्टाम्प की ज़रूरत न हो उस के लिये जाइज़ अंगूठी भी न पहनना) अफ़्ज़ल है और (जिन को अंगूठी से स्टाम्प लगानी हो उन के लिये) मोहर की ग़रज़ से (पहनने में) ख़ाली जवाज़ (या'नी सिर्फ़ जाइज़ ही) नहीं बल्कि **सुन्नत** है, हां **तकब्बुर** या ज़नाना पन का सिंगार (या'नी लेडीज़ स्टाइल की टीप टॉप) या और कोई ग़रज़े मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत मक़्सद) निय्यत में हो तो एक अंगूठी (ही) क्या इस निय्यत से (तो) अच्छे कपड़े पहनने भी जाइज़ नहीं (फ़तावा रज़विय्या, 22/141) ❀ ईदैन में अंगूठी पहनना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, 1/779, 780) मगर मर्द वोही जाइज़ वाली अंगूठी पहने ❀ अंगूठी उन्हीं के लिये **सुन्नत** है जिन को मोहर करने (या'नी स्टाम्प STAMP लगाने) की ह़ाजत होती है, जैसे सुल्त़ान व क़ाज़ी और उ़लमा जो फ़तवे पर (अंगूठी से) मोहर करते (या'नी स्टाम्प लगाते) हैं, उन के इ़लावा दूसरों के लिये जिन को मोहर करने की ह़ाजत न हो **सुन्नत** नहीं अलबत्ता पहनना जाइज़ है। (عالمگیری، 5/335) फ़ी ज़माना अंगूठी से मोहर करने का उ़र्फ़ (या'नी मा'मूल व रवाज) नहीं रहा, बल्कि इस काम के लिये "स्टाम्प" बनवाई जाती है, लिहाज़ा जिन को मोहर न लगानी हो उन क़ाज़ी वग़ैरा के लिये भी अंगूठी पहनना **सुन्नत** न रहा ❀

मर्द को चाहिये कि अंगूठी का नगीना हथेली की जानिब और औ़रत नगीना हाथ की पुश्त (या'नी हाथ की पीठ) की त़रफ़ रखे (الہدایۃ،4/367) ❀ चांदी का छल्ला ख़ास लिबासे ज़नान (या'नी औ़रतों का पहनावा) है मर्दों को मक्रूहे (तह़रीमी, ना जाइज़ व गुनाह है) (फ़तावा रज़विय्या, 22/130) ❀ औ़रत सोने चांदी की जितनी चाहे अंगूठियां और छल्ले पहन सकती है, इस में वज़्न और नगीने की ता'दाद की कोई क़ैद नहीं ❀ लोहे की अंगूठी पर चांदी का ख़ौल चढ़ा दिया कि लोहा बिल्कुल न दिखाई देता हो, उस अंगूठी के पहनने की (मर्द व औ़रत किसी को भी) मुमानअ़त नहीं। (عالمگیری،5/335) ❀ दोनों में से किसी भी एक हाथ में अंगूठी पहन सकते हैं और छुंग्लिया या'नी सब से छोटी उंगली में पहनी जाए (ردالمحتار،9/596) ❀ मन्नत का या दम किया हुवा धात (METAL) का कड़ा भी मर्द को पहनना ना जाइज़ व गुनाह है इसी त़रह़ ❀ मदीनए मुनव्वरह या अजमेर शरीफ़ के चांदी या किसी भी धात के छल्ले और स्टील की अंगूठी भी जाइज़ नहीं ❀ बवासीर व दीगर बीमारियों के लिये दम किये हुए चांदी या किसी भी धात के छल्ले भी मर्दों के लिये जाइज़ नहीं ❀ अगर किसी इस्लामी भाई ने धात का कड़ा या धात का छल्ला, ना जाइज़ अंगूठी, या धात की ज़न्जीर (BRACELET-CHAIN) पहनी है तो शर्अ़न लाज़िम है कि अभी अभी उतार कर तौबा कर लीजिये और आयिन्दा न पहनने का अ़ह्द कीजिये। नीज़ किसी और इस्लामी भाई को भी पहनने के लिये मत दीजिये।

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

जामिअ़तुल मदीना में दाख़िला ले लिया

ना जाइज़ अंगूठियों वग़ैरा से बचने बचाने का जज़्बा पाने, गुनाहों की आ़दतों से पीछा छुड़ाने, नेक बनने बनाने और ख़ूब ख़ूब नेकी की दा'वत की धूमें मचाने का शौक़ बढ़ाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आमाल के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "जाएज़ा" कर के नेक आमाल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाऊं चुनान्चे एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल مَعَاذَاللّٰه मैं नमाज़ों से कोसों दूर गुनाहों के समुन्दर में डूबा हुवा था और बड़े जोश व ख़रोश से घर में T.V. पर फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने में अपना वक़्त बरबाद करता था। राहे तौबा पर मेरे सफ़र का आग़ाज़ कुछ इस त़रह़ हुवा कि रमज़ानुल मुबारक 1429 हि. (ब मुत़ाबिक़ 2008 ई.) के एक दिन केबल पर मुख़्तलिफ़ चैनल

देखते हुए मेरी नज़र दा'वते इस्लामी के चैनल पर पड़ गई। मैं ने देखा तो देखता रह गया! दा'वते इस्लामी का चैनल मुझे बहुत अच्छा लगा और बस मैं ने दा'वते इस्लामी का चैनल देखने का मा'मूल बना लिया। दा'वते इस्लामी के चैनल की बरकत से اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं आहिस्ता आहिस्ता दीनी माह़ोल के क़रीब होने लगा। शव्वालुल मुकर्रम (1429 हि.) के आख़िरी अ़शरे में दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ दा'वते इस्लामी के चैनल पर बराहे रास्त (LIVE) दिखाया जा रहा था। इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन ख़ुसूसी निशस्त में दा'वते इस्लामी के चैनल पर मुबल्लिग़ का रिक़्क़त अंगेज़ बयान ब उ़न्वान ''ज़ुल्म का अन्जाम'' सुन कर हम सब घर वाले ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठे, सब ने घबरा कर उसी वक़्त अपने गुनाहों से तौबा की और اَلْحَمْدُلِلّٰه सब के सब हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सिल्सिले में मुरीद हो कर क़ादिरी रज़वी बन गए। **अल्लाह** पाक की रह़मत से हमारे ख़ानदान में दीनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और हमारे रिश्तेदार भी इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सिल्सिले में मुरीद हो गए। ता दमे तह़रीर मैं ने इ़ल्मे दीन के मदनी फूल समेटने की ख़ातिर दा'वते इस्लामी के तह़्त चलने वाले जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी के लिये दाख़िला भी ले लिया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

हम दुन्या में किस लिये आए हैं ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों भरा बयान ''**ज़ुल्म का अन्जाम**'' जिसे सुन कर सारा घराना गुनाहों से ताइब हो गया, इसे आप भी

कम अज़ कम एक बार ज़रूर सुन लीजिये। येह बयान दा'वते इस्लामी की वेब साइट पर भी सुन सकते हैं। बयान का रिसाला "**ज़ुल्म का अन्जाम**" भी **मक्तबतुल मदीना** से ह़ासिल कर के पढ़िये बल्कि ज़ियादा ता'दाद में हदिय्यतन अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये तक़्सीम फ़रमाइये। इस मदनी बहार से मा'लूम हुवा कि जो काम एक मुबल्लिग़ नहीं कर पाता اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह काम दा'वते इस्लामी का चैनल कर दिखाता है या'नी गुनाहों की दलदल में धंसे हुए मुआ़शरे के वोह अफ़राद जो न मस्जिद का रुख़ करते हैं न कभी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक होते हैं न ही उ़लमाए किराम और **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों और बा रीश व बा इ़मामा आ़शिक़ाने रसूल से मिलने जुलने की त़रफ़ रग़बत रखते हैं, दा'वते इस्लामी का चैनल ऐसों के घरों में दाख़िल हो कर इन्हें इन की ज़िन्दगी का ह़क़ीक़ी मक़्सद समझाता, सआ़दत मन्दों को **अल्लाह** पाक के हुज़ूर झुकाता और इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जाम पिलाता है। बेशक हम दुन्या में बेकार या'नी सिर्फ़ दुन्या की लज़्ज़तें पाने और यहां की आसाइशों से लुत़्फ़ उठाने के लिये नहीं आए, हमें यहां इ़बादत के लिये भेजा गया है, फिर वक़्ते मुक़र्ररा पर हमारे लाख न चाहने के बा वुजूद मौत हमें आ लेगी और अंधेरी क़ब्र में तने तन्हा उतार दिये जाएंगे, न जाने कितने हज़ार साल क़ब्र में गुज़ार कर फिर ह़श्र में उठना और बरोज़े क़ियामत ह़िसाब किताब का सामना होगा।

अगले हफ़्ते का रिसाला